

Gudi Padwa Puja

Date : 13th April 2002
Place : Gurgaon
Type : Puja
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

| | |
|---------|---------|
| Hindi | 02 - 05 |
| English | - |
| Marathi | - |

II Translation

| | |
|---------|---------|
| English | 06 - 07 |
| Hindi | - |
| Marathi | - |

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahiri

हम लोग जो मानते हैं गुड़ी पड़वा ऐसा हर एक जगह है, साउथ में भी है। हर जगह ये त्यौहार मनाया जाता है। जो सम्वत् शुरु हुआ है और जो शालीवाहन ने भी सम्वत् शुरु किया वो सब एक ही दिन पड़ते हैं। वो आज का ही दिन है और सारे देश में उसको माना जाता है। उसी के हिसाब से सब हमारी तिथियां और सब हमारी तारीखें बनायी जाती हैं खास करके त्यौहार। और हम लोग चन्द्रमा के कैलेंडर पर चलते हैं। विदेशी लोग जो हैं वो सूर्य के कैलेंडर पर चलते हैं इसलिए उनकी तारीख कभी बदलती नहीं है।

अपने यहाँ हर एक त्यौहार हमेशा चन्द्र की स्थिति पर होता है और इसलिए हमारे यहाँ की तारीख भी बदलती है और अलग-अलग दिन वही त्यौहार होता है, इस प्रकार चन्द्रमा का जो है हम लोग बहुत मान करते हैं और उसके अनुसार जो अपनी सब तिथियां मानते हैं। उसका कारण ये है कि चन्द्रमा का असर मनुष्य पर ज़्यादा होता है, सूर्य का नहीं होता और चन्द्रमा के साथ जो और ग्रह हैं उनका भी असर मनुष्य पर होता है। इसलिए चन्द्रमा को ही हम लोग मानते हैं और उसी के अनुसार हम अपने जो भी त्यौहार हैं, जो

भी तिथियां हैं वो मानते हैं। एक तारीख ऐसी जरूर है जो सूर्य के रूप से होता है। सूर्य जब दक्षिणायण से उत्तरायण में आता है उस दिन जरूर हम एक त्यौहार मानते हैं। वो सारे देश में वही दिन माना जाता है। अब जो है, चन्द्रमा के हिसाब से, ज्योतिष शास्त्र भी हमारे यहाँ चन्द्रमा के हिसाब से चलता है। ज्योतिष में भी चन्द्रमा की स्थिति देखी जाती है। कहाँ है, क्या है। उसी के अनुसार ज्योतिष शास्त्र बनाया जाता है। और इसीलिए जो पहले हमारा कैलेंडर बनाया गया जिसको कि हम लोग कहते हैं शालीवाहन-शक् वो भी सब चन्द्रमा पर बना हुआ है। सारी तिथियां भी चन्द्रमा पर निर्भर हैं, जिन लोगों को अपनी तिथि का पता नहीं होगा वो समझ नहीं पाएंगे कि क्यों अलग-अलग तिथि पे ये त्यौहार आते हैं।

वो जो भी हो हमें सोचना चाहिए कि चन्द्रमा का इतना महत्व हम लोगों ने किया उसका कारण यह है कि चन्द्रमा से जो हमारे ऊपर असर आते हैं उसके बारे में हम सतर्क रहें। चन्द्रमा से सबसे बड़ा असर ये आता है कि हमारी Left Side उस पर आधारित है इसके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं, और ये जो Left Side हमारे

अंदर आ गयी है जिसका कि हम लोगों ने विशेष रूप से जतन किया हुआ है, इस देश ने माना हुआ है, उसकी वजह यह है कि इसके परिणाम हमारे ऊपर मानसिक हैं, Left Side में जो असर आते हैं वो मानसिक हैं। बौद्धिक नहीं हैं, मानसिक हैं, उसको हम कंट्रोल नहीं कर सकते। जो मानसिक तकलीफें हैं उसको हम कंट्रोल नहीं कर सकते। चन्द्रमा के जो असर हैं उसको हम कंट्रोल नहीं कर सकते। इसलिए चन्द्रमा की तिथि देखी जाती है। जैसे अमावस्या चन्द्रमा की होगी या पूर्णिमा होगी तो गर किसी आदमी में मिर्गी की बीमारी हो या इस तरह की मानसिक तकलीफ हो तो बहुत बढ़ जाएगी। उस वक्त में एकदम दिखाई देगा कि इनको असर आया है पूर्णिमा का या इन पर असर आया है अमावस्या का, इसलिए हम लोग इस तरफ बहुत संवेदनशील हैं कि चन्द्रमा कहाँ है कौन सी तिथि में हैं, इसका Calculation हमारे यहाँ इतना बारीक किया हुआ है कि हमारे यहाँ ग्रहण कब लगेंगे और ग्रहण की स्थिति क्या रहेगी, वह कब टूटेंगे, इतना ज्यादा हमारे यहाँ उसपर विचार किया गया है और इतना हमारे अंदर उसका ज्ञान है। इससे दिखता है कि अपने देश में चन्द्रमा के असर का बहुत ख्याल किया गया है, विचार किया गया है और उसपर आधारित उन्होंने इतनी बातें कही हुई हैं। अब ऐसा है कि Modern Times में हम लोग आ गए तो सूर्य के ही ऊपर से सब

चलता है, पर यह बात सही नहीं है। हमको चन्द्रमा की स्थिति जरूर देखनी चाहिए कि आज क्या स्थिति है कल क्या स्थिति है? आज कौन सा असर आएगा? यह बड़ा गहन विषय है जिसके बारे में जानना चाहिए और अपने देश में इसके ऊपर बड़ा विचार किया जाए।

अब आज के दिन जो इतना माना जाता है वो नववर्ष है इसलिए और चन्द्रमा का आगमन है इसलिए भी आज का दिन माना जाता है। इस दिन जो गुड़ी-पड़वा कहते हैं जिसको कि एक लोटे के अन्दर एक पताका लगाके और पताके का डंडा वो जो लोटा होता है उसमें लगा देते हैं, यह जो लोटा होता है यह Represent करता है कुण्डलिनी को और उसमें समर्पित होकर के किया हुआ है। शालीवाहन लोग जो थे वो देवी भक्त थे और कहा जाता था कि ये देवी को शाल देते थे। पर वो सातवाहन भी कहलाए जाते थे, शुरु में क्योंकि वो सात चक्रों को मानते थे। इसलिए उनको, शालीवाहन, बाद में बदल गया, पर है सातवाहन। सातवाहन से अब शालीवाहन हो गए। पर शालीवाहन का प्रतीक वही बनाते हैं कि गुड़ी खड़ी करेंगे। गुड़ी के माने झंडा, वो प्रतीक रूप और उसके ऊपर में—एक जो लोटा होता उसका एक Particular Shape होता है वो भी कुण्डलिनी का द्योतक है। वो कुण्डलिनी के पुजारी थे। कुण्डलिनी को मानते थे। इसलिए उन्होंने वो चीज़ इस तरह की बनाई है

और जो मानता है वो ऐसी गुड़ी अपने घर में खड़ी करता है, एक झंडा लगाता है। इसका कारण वही है कि वो लोग चाहते थे कि हम इस दिन कुण्डलिनी का स्वागत करते हैं और कुण्डलिनी का विशेष रूप से प्रदर्शन करते थे। लोगों को पता ही नहीं कि ऐसा क्यों करते हैं, करते ही जा रहे हैं। कोई चीज़ करते रहते हैं। पर पूछना तो चाहिए कि ऐसा क्यों! यह क्या चीज़ है।

क्योंकि वो सातवाहन थे, सातवाहन को मानते थे और कुण्डलिनी के रक्षक थे, कुण्डलिनी की पूजा करते थे इसलिए उन्होंने इस तरह से अपना नववर्ष शुरू किया। नववर्ष में उन्होंने ये द्योतक मतलब ऐसा मनाया कि एक लोटा हो और उसके नीचे ये झंडा, ये गुड़ी लगाई जाए। यहाँ इस चीज़ को इतना मानते नहीं और कोई जानता भी नहीं है। पर सम्वत् सर भी जो छपता है या विक्रम, वो भी आज ही से शुरू हुआ है। हो सकता है दोनों के साल अलग हों पर दिन यही है। ये भी इसी अमावस्या को मानते हैं और वो भी इसी अमावस्या को मानते हैं। तो इस तरह से ये जो गुड़ी पाड़वा है, ये जो चीज़ है ये दोनों में माना जाता है। अमावस्या नहीं होती, प्रथमा जिसको कहते हैं पहला दिन, वो है आज, इसीलिए आज चन्द्रमा वगैरह कुछ नहीं। आज आकाश में, पूरा अंधेरा है। पर हम लोगों को जानना चाहिए कि हमारे देश के अंदर ये क्यों होता है और उसके अंदर उसकी क्या विशेषता है। जब

तक हम लोग अपने देश के बारे में नहीं जानेंगे, हमें उसके प्रति आदर, प्रेम नहीं हो सकता। बहुत बड़ी-बड़ी गहरी चीज़ें हैं। पर वो गहरी चीज़ें हम जानते ही नहीं। कह दिया कलियुग है। ये कलियुग क्यों है, कैसे आया? इसका क्या मतलब है? ये सब हम लोग जानते नहीं हैं, सिर्फ सुन-सुन के बातें करते हैं, पर इसकी बड़ी भारी कहानी है कलियुग की, परिक्षित राजा के Time की। वो कोई जानता ही नहीं, कोई पढ़ता ही नहीं। सब बेकार की चीज़ें पढ़ते रहते हैं। ज़्यादा से ज़्यादा कभी हो तो रामायण पढ़ लेंगे पर इसके पीछे में जो संदेश है या इसके पीछे में जो शास्त्र है, उसके बारे में कोई जानता नहीं।

तो हम सहजयोगियों को चाहिए कि हम जानें, हमारे देश की जो सभ्यता है वो कहाँ से आयी और किस तरह से हम इस स्थिति में पहुँचे, ये जानना चाहिए, क्योंकि उसको जाने बगैर हमारे अंदर यही परदेसी दिमाग आ जाएगा और उससे अहंकार और ये सब चीज़ें आ जाएंगी। बेहतर है कि समझ लें कि हमारे अंदर जो ये चीज़ें हैं वो कहाँ से आयी हैं उसका क्या महात्म्य है। ये हम क्यों करते हैं? बस यूँ अपना करते हैं सब लोग, तो हम भी करते हैं। ये बात ठीक नहीं, उसको समझ लेना चाहिए। यही मैं चाहती हूँ कि सब सहजयोगी इसको समझ लें, जान लें। ग़र हमारे पास Time होता तो हम सब लिख देते पर हमारे पास Time नहीं है। आप लोग इसको पढ़ सकते

हैं और जान सकते हैं। अपने यहाँ सारी किताबें हैं। हिन्दुस्तान में हिन्दी भाषा में इतनी किताबें हैं, कोई ये किताबें पढ़ता ही नहीं। सारी दिल्ली में ही मिलती हैं। मैंने तो दिल्ली में ही खरीदी थी। तो इनके बारे में जानना चाहिए, जो पौराणिक है जो कहने को पौराण हैं लेकिन उसमें बहुत सी फायदे की बातें हैं जो समझ लेने से हम समझ सकते हैं कि भारतवर्ष के नींव में क्या चीज़ है। हम लोग हिन्दुस्तानी क्यों सबसे श्रेष्ठ माने जाते हैं? मतलब सामाजिक रूप से न हों पर सांस्कृतिक रूप से हम लोग बहुत श्रेष्ठ माने जाते हैं। और दूसरा ये कि धर्म में कैसी स्थापना करना चाहिए, धर्म क्या है बहुत कुछ गहरी बातें लिखी हुई हैं। मैं चाहती हूँ कि आप लोग कुछ इसका अध्ययन करें, पढ़ें तो एक नई दिशा आप लोगों को मिल सकती है।

क्योंकि विदेशी भाषा जो है या विदेशी जो कुछ भी ज्ञान है वो बहुत ही ज़्यादा Superficial कहलाती है। इसलिए आप लोग कोशिश करें कि आपके यहाँ सस्ता साहित्य है, मैंने वहीं से बहुत सी किताबें खरीदीं, सुन्दर है दुकान, उसी दुकान से बहुत सी किताबें लाई थी, बहुत सस्ती मिलती हैं। पैसा नहीं लगता। पर Time चाहिए पढ़ने के लिए। फालतू चीज़ें हम पढ़ते रहते हैं, फालतू सिनेमा देखते रहते हैं, फालतू News पढ़ते रहते हैं, पर जो हमारा अध्ययन होना चाहिए वो बहुत गहन और ऐसी चीज़ों पे होना चाहिए जो हमारे पास बहुत सालों से आयी है। आज का दिन बड़ा शुभ है। वैसे, मेरी इतनी तबीयत अच्छी नहीं थी पर मैंने कहा कि ऐसे शुभ अवसर पे क्या करें, पूजा में तो जाना ही है।

अनंत आशीर्वाद

ENGLISH TRANSLATION

(Hindi Talk)

The festival of Gudi Padwa that we celebrate is also celebrated in other places, even in south(India). Everywhere this festival is celebrated. The 'Samvat' year that was started (*By King Vikramaditya*) and the 'Samvat' year started by Shalivahanas, both start on the same day. That day is today. All over the country this day (*New Year*) is celebrated. All the important dates in the year are fixed on that basis especially the festivals. We people (*Indians*) follow the lunar calendar whereas the foreigners follow the sun calendar. That's why their dates (*offestivals*) do not change. Here (*in India*) every festival is based on position of the moon. And that's why the dates keep changing (*every year*) and a festival occurs on different dates in different years. The reason why we give importance to the moon and keep all our dates according to its position, is that the moon has more influence on human beings than the sun. Along with the moon, other planets also have influence on us. That is the reason we observe festivals as per the lunar calendar.

But there is one festival where date is as per position of the sun. When the sun starts its movement from southern hemisphere to northern hemisphere, that day is celebrated as a festival (*Sankranti*). Throughout the country this festival is celebrated.

In our country astrology is also based on the position of the moon. That's why the first calendar that was made here which is called as Shalivahana Shaka is based on the movement of the moon. All the dates are based on the position of the moon. Those people who are not aware of our (*Indian*) system of dates will not be able to understand as to why the festivals fall on different dates in different years.

Whatever it is, we must think as to why we give so much importance to the moon. The reason is that we should remain vigilant about the effects that the moon has on us. The biggest effect that the moon has on us is because our left side is based on it. Very few people know about it. This left side of the body which is recognised and accepted so much in our country, has psychological effects on us. Effects on the left side are psychological and not intellectual, and we cannot control it. Whatever psychological problems we have, cannot be controlled. We cannot control the effect of the moon on us. That's why the position of the moon is seen and lunar dates are observed. For example if it is a no-moon night (*Amavasya*) or a full moon night (*Poornima*) then the problem of a person, having epilepsy or any other psychological problem, will aggravate further. One can immediately see very clearly that such a person has been affected by the full moon or no-moon. That's why we are very much sensitive towards the position of moon and date of lunar month. In our country detailed calculations are done on this, to know about the exact timings and position of the eclipse. All this shows that in our country a lot of care is taken about the effects of lunar calendar and so much has been discussed and written about it.

Now we live in these modern times, where the dates and festivals are based on the position of the sun. But this is not correct. We must see the position of the moon- what is its position today, what will it be tomorrow, how it will affect us today. This is a very deep subject about which we all must know and it should be discussed in our country.

So this day is celebrated because it's a new year day and also because the new moon appears on this day. Its is called Gudi Padwa. On this day they put up a small pitcher on a stick with a small flag. The pitcher represents the Kundalini. Shalivahana Kings were worshippers of the Goddess and it is said that they used to present Shawl to the Goddess and they were also called as Satvahanas in the beginning because they recognised the seven chakras (*Satvahana means seven chakras*). That's why

they were earlier called as Satvahana but later it changed to Shalivahana. But the symbol of Shalivahana used to be Gudi means a flag and above that a pitcher having a particular shape, which represented the Kundalini. They were worshippers of Kundalini and recognised it.

That is the reason that they have made this thing like that and all those, who accept it, put up a 'Gudi' in their houses. They (*Shalivahans*) wanted to welcome Kundalini on this day and Kundalini (*in the form of pitcher*) was exhibited specially on that day. But people do not know why it is done like that. They go on doing things like that. At least they should ask, why its done like this? What is this thing? Because they were Satvahana and accepted the seven chakras, they used to worship and protect the Kundalini, so they started their new year like this. They celebrated their new year in which there was a small pitcher and below that a flag , called Gudi, was attached. Here (*in Delhi/North India*) people do not know about it. But Samvat Year and Vikram year, both started from this day. It may be that they started in different years but both started from the same day i.e. today's date. Both recognised the same no-moon night. In this way this Gudi Padwa is observed by both. Not no-moon night but first day of the fortnight (Prathama). This is why there is no moon in the sky and it is completely dark.

But we must know why it is celebrated in our country and what is its importance. Unless and until we know about our country, we will not be able to have respect and love for it. There are a lot of very deep and important things about our country but we do not know about them. We just say it is Kaliyuga. Why is it a Kaliyuga? How it came about? What is the meaning of it? We do not know all this. We just hear a few things and start talking about it. There is a big story about this Kaliyuga which took place in the times of King Parikshit. Nobody knows about it and no one reads about it. We keep reading useless things. At the most we sometimes read Ramayana. But what is the message behind it? What are the scriptures , nobody knows. Sahaja yogis must know how our civilisation has evolved and how we have arrived to this present state. Without knowing all this we develop an approach which is like foreigners and that gives us ego. It is better to understand from where we have acquired all these things within us and what is their importance. Why we celebrate all these festivals. Just because everybody else is doing this so we also do the same. This kind of attitude is not all right. We must understand what we are doing. I want that all Sahaja Yogis should understand the significance of all these.

If I had the time, I would have written all this for you. But I do not have time. You can read and know all about it. There are so many books about it in Hindi language in India. Nobody reads them. They are all available here in Delhi. I bought them in Delhi only. So we must know all about it. In the mythology, a lot of useful things are mentioned which once understood, will tell us what is the foundation of India. Why we Indians are considered the most superior human beings. Not from the social point of view but culturally we people are considered supreme.

Secondly we also must know how we should be established in our religion, what is religion? All these things are mentioned in depth in all these books. I want that all of you should study this and it will give you a new direction. The foreign languages or foreign knowledge are all very superficial. I purchased a lot of books from Satya Sahitya (*name of bookshop*) It is a good shop and I bought a lot of books from there. It does not cost much. It is very cheap. But you need time to read all that. We keep reading useless things, watch useless movies, read useless news items. Our study should be in depth and in subjects which we have been having since ages.

Today it is a very auspicious day. I was not feeling well but I thought on this auspicious occasion I must have the Puja.

Eternal Blessings to all of you.